महामानव

सुपर कमांडो ध्रुव

कथा एवं चित्र : अनुपम सिन्हा

संपादक : मनीष चन्द्र गुप्त

संसार का सबसे वीरान इलाका अगर कोई है, तो वह है उत्तरी ध्रुव का बर्फीला इलाका। लेकिन अब यहां की अनछुई बर्फ पर भी मानव के पैरों की छाप पड़ने लगी है–
और इन पैरों में भारतीय पैर भी शामिल हैं–
हमारे नए स्टेशन के लिए यह स्थान कैसा है, नारायणन?
बहुत अच्छा! यह स्थान थोड़ी ऊंचाई पर भी है, कैप्टेन सिंह।
इससे हमको दूर-दूर तक सर्वेक्षण करने में काफी आसानी रहेगी।
लेकिन यह देखिए, कैप्टेन!
यह तो ग्रेफाइट है। यानि ज्वालामुखी का जमा हुआ लावा।
हां, सर! मेरा ख्याल है कि इस समय हम एक मृत ज्वालामुखी के ऊपर खड़े हैं।
तुम ठीक कह रहे हो, राघव! लेकिन यह ज्वालामुखी अब मर चुका है।
दुबारा इसके फट पड़ने की संभावना शून्य है।
हम अपना स्टेशन यहीं पर बनाएंगे।
और शीघ्र ही– एसीटिलीन टॉर्चों की तेज गर्मी बर्फ को तेजी से पिघलाने लगी–
बर्फ की कठोर सतह पर लोहे के गर्डर गाड़ने के लिए गड्ढे बनने लगे।
और तभी– पूरी जमीन हिल उठी–
य... यह क्या?
भूकम्प... त... तो नहीं आ रहा है?
लेकिन आने वाली मुसीबत भूकम्प जितनी मामूली नहीं थी–
इस मुसीबत का एक सिर था।

–और साथ में पूरा शरीर भी–
चियाँऽऽऽऽऽऽ
हे भगवान! अब तू ही रक्षा करना! लेकिन ... लेकिन, कैप्टेन सिंह...
य–यह तो एक मांसाहारी डायनासौर है। टाइरेनोसॉरस रेक्स!! ले...लेकिन यह यहां–? राघव, तुरंत संदेश भारत भेजो!
इसके आगे कैप्टेन सिंह को बोलने का मौका नहीं मिला। और न ही नारायणन को–
हैलो, इंडिया! हैडक्वार्टर नार्थ पोल मिशन!...
...हमने यहां पर एक डायनासौर...आह!
टाइरेनोसॉरस को अपनी सदियों पुरानी भूख शांत करनी थी–
और राघव के पास अब डरने का वक्त भी नहीं बचा था।

भूकंप शांत हो जाने के बाद भयानक डायनासौर एक तरफ बढ़ा –
–और दो पैरों के पास पहुंचकर पालतू कुत्ते की तरह शांत हो गया।
और वहां से हजारों कि॰मी॰ दूर-राजनगर के कमांडो हैडक्वार्टर में –
कैप्टेन! हमारे ट्रांसमीटर पर कोई अजीब सा संदेश आ रहा है।
क्या?
सुनो! हमारा ऑटोमेटिक टेपरिकार्डर संदेश दुबारा सुना रहा है।
हैलो, इंडिया! हैडक्वार्टर नार्थ पोल मिशन। हमने यहां पर एक डायनासौर... आह! —धड़ाक!
डायनासौर? और आज के युग में? इस का क्या मतलब हो सकता है?
ज्यादा माथापच्ची की जरूरत नहीं है, करीम!
'नार्थ पोल मिशन' के हैडक्वार्टर पहुंचकर सब एक मिनट में समझ आ जाएगा।
और वैसे भी उन तक यह मैसेज तुरंत पहुंचाना बहुत आवश्यक है।
और लगभग आधे घंटे बाद –
हैलो, इंडिया! हैडक्वार्टर 'नार्थ पोल मिशन'
HEAD QUARTER
NORTH POLE MISSION

हमने यहां पर एक डायनासौर... आह!
बस! हमारे ट्रांसमीटर ने इतना ही संदेश ग्रहण किया है, सर!
यह संदेश तो हमारे ट्रांसमीटर पर भी आया है।
और यह हमारे 'नार्थ-पोल मिशन' के रेडियोमैन राघव की आवाज है। लेकिन इस संदेश का क्या मतलब हो सकता है?
डायनासौर और इस युग में!?
यह तो असंभव है।
बात तो सही है, सर! जहां तक मैं जानता हूं, डायनासौर आज से 150 करोड़ साल पहले इस पृथ्वी पर पाए जाते थे।
हां। और वे सारे के सारे अचानक ही खत्म हो गए।
क्यों और कैसे, यह कोई नहीं जानता।
इस संदेश से यह भी साफ है कि हमारा पूरा अभियान-दल किसी भयानक विपत्ति में घिरा हुआ है। उनको तुरंत मदद पहुंचानी बहुत जरूरी है।
—और किसी भी सहायता दल को तैयार करने में वक्त लगेगा।
सर, अगर आप इजाजत दें तो मैं...
मैं तुमसे यही कहना चाहता था, ध्रुव! पर यह जानते हुए भी कि वहां पर जान का खतरा हो सकता है, तुम जाने को तैयार हो?
सर, मैं सिर्फ उन जगहों पर ही जाना पसंद करता हूं,...
...जहां पर जान का खतरा हो।
और किसी जगह पर मेरा क्या काम?
मैं जानता हूं, ध्रुव, कि अगर कोई यह काम कर सकता है, तो वह तुम हो!...
...मैं तुम्हारे लिए तुरंत एक 'रिलीफ-प्लेन' का इंतजाम करता हूं।
...मेरे साथ आओ।

और शीघ्र ही - ध्रुव अपने फर्ज को निभाने के लिए पृथ्वी के उत्तरी छोर की तरफ बढ़ चला -
जहां पर दूर-दूर तक बर्फ के ठंडे सन्नाटे के अलावा और कुछ नहीं दिख रहा था -
डायरेक्टर साहब के अनुसार तो अभियान-दल को यहीं कहीं होना चाहिए।
हां! वे रहे उनके उपकरण।
मुझे भी प्लेन को यहीं उतारना चाहिए।
लेकिन ध्रुव को प्लेन उतारने की मेहनत नहीं करनी पड़ी -
ग र्र र्र र्र
य...यह क्या?
मुझे तो अपनी आंखों पर यकीन नहीं हो रहा है।
ध्रुव ने बड़ी मुश्किल से स्लीपर-प्लेन को डायनासौर के बढ़ते जबड़े से बचाया -
लेकिन डायनासौर की पूंछ पर उसका ध्यान नहीं था -
हवाई जहाज के पीछे एक जबरदस्त टक्कर लगी -
तड़

हवाई-जहाज कुछ क्षणों के लिए ध्रुव के नियंत्रण से बाहर हो गया-
लेकिन उसने शीघ्र ही प्लेन पर काबू पा लिया-
इस पर तो पिस्तौल की गोलियों का भी कोई असर नहीं होगा।
मैं इस दुर्लभ जीव को खत्म करना तो नहीं चाहता।-
लेकिन बिना इसको खत्म किए, मैं अभियान दल की तलाश करने के लिए उतर भी तो नहीं सकता।
ध्रुव ने रिलीफ-प्लेन का रुख सीधे डायनासौर की तरफ मोड़ दिया।
'रिलीफ-प्लेन' तेज़ी से डायनासौर की तरफ बढ़ा-
और उसी क्षण ध्रुव प्लेन से बाहर कूद पड़ा।
लेकिन न जाने कैसे-डायनासौर तक पहुँचने से पहले ही-
प्लेन के टुकड़े-टुकड़े हो गए।
अब ध्रुव के सामने साक्षात मौत खड़ी थी-
और उससे बचने का शायद कोई रास्ता भी नहीं था।

लेकिन ध्रुव ने बड़ी मुश्किल से अपने होशोहवास कायम रखे –
अब मुझको सिर्फ लोहे का यह रस्सा ही बचा सकता है। –
जिसका प्रयोग शायद यहां पर स्टेशन बनाने में किया जाने वाला था।
लेकिन अब यह मेरी जान बचाने में काम आएगा।
ध्रुव की शक्तिशाली बांहों ने लोहे के रस्से को डायनासौर की गर्दन तक उछाल दिया।
और फिर रस्से के दूसरे छोर को पकड़कर ध्रुव का बदन हवा में उछला –
उसका सर्कस में सधा हुआ शरीर फिरकी की तरह हवा में घूमने लगा –
और भयानक डायनासौर टाइरेनोसोरिस की गर्दन एक मजबूत शिकंजे में कसने लगी –
उसका दम घुटने लगा।
आखिरकार उसके कांपते पैरों ने भी उसका साथ छोड़ दिया –

और डायनासोर का विशाल शरीर, एक कटे हुए वृक्ष की तरह बर्फ पर आ गिरा–
लगता है कि यह बेहोश हो गया।
मेरी योजना सफल रही।
इससे पहले कि यह बदसूरत होश में आए, मुझे इसको बांध देना चाहिए।
और तभी–
शाबास, मानव! आज तुमने मुझे वह दृश्य दिखाया, जो मैं कभी सोच भी नहीं सकता था।
यह क्या!? ऐसा... ऐसा लगता है मानो कोई मेरे दिमाग के अंदर से बोल रहा हो।
तुमको ठीक महसूस हो रहा है, मानव! तुम इसको 'टेलीपैथी' या 'मानसिक-सम्पर्क' कहते हो। अपने पीछे मुड़कर देखो।
घूम मुड़ा।
और वह आश्चर्य से जड़ हो गया–
तु...तुम कौन हो?
आप बोलो, मानव! अपने से बड़ों की इज्जत करना सीखो।
खास तौर से उसकी...
...जो तुमसे लगभग दो सौ करोड़ साल बड़ा है।

द-दो सौ करोड़ साल!!?
आश्चर्य मत करो। मैं मनुष्य का भविष्य हूं।
मनुष्य आज से करोड़ों साल बाद मुझ जैसा ही दिखेगा।
लेकिन तुम... मेरा मतलब आप यहां कैसे आए?... यानि आप समझे न?
हां! लेकिन मैं तो यहां पर हमेशा से था। आए तो तुम मानव हो।
वैसे मेरे जन्म की बात बहुत पुरानी है। अब तो ठीक से याद भी नहीं है। लेकिन इतना याद है कि उस वक्त पृथ्वी पर जीवन की शुरुआत हुई ही थी।
सारे महाद्वीप एक साथ जुड़े हुए थे। यानि कि सारी जमीन एक ही स्थान पर थी।
सूर्य उस वक्त, आज की तुलना में, दुगुनी तेज़ी से चमकता था। पृथ्वी पर वायुमंडल भी बहुत पतला था। इसी कारण सूर्य की जीवनदायी किरणें पृथ्वी तक पूरी तरह से पहुंचती थीं।
सूर्य की इन रहस्यमय जीवनदायी किरणों के कारण, पृथ्वी पर जीवन बहुत तेज़ी से शुरू हुआ।
मैंने अपना जीवन एक अकेली कोशिका से शुरू किया था, जो न जाने कैसे, उत्तरी ध्रुव तक पहुंच गई थी।
सूर्य की किरणों से हर दिन मुझ में इतना परिवर्तन हो जाता था, जितना आज शायद एक लाख वर्षों में भी न होता।

मैं आखिरकार मानव रूप में पहुंचा।
दरअसल, जब मेरा विकास ध्रुव प्रदेश में हो रहा था।
उस वक्त सूर्य की किरणें ... प्रदेश में भीमकाय जानवर पैदा कर रही थी।
यह मुझसे बर्दाश्त नहीं हुआ कि इनके जैसे कीड़े पृथ्वी पर पनपे, क्योंकि पृथ्वी मेरा घर थी।

मैंने अपनी मानसिक तरंगों को केंद्रित किया। और पूरी पृथ्वी धीरे धीरे बर्फ से ढकने लगी।
इधर-उधर भागने लगे।
यह सोचकर मैंने अपनी मानसिक तरंगों की मदद से
लेकिन वे जहां पर भी जाते, उनको बर्फ ही बर्फ मिलती।
वह गोला वास्तव में एक टाइरेनासोरस का अंडा था, जो न जाने कैसे जिंदा बच गया था।
?
मैं जानता हूं। इस युग को हम लोग 'हिम-युग' या 'आइस एज' कहते हैं।
लेकिन फिर क्या हुआ?

वह मुझको अंडा उठाते देख कर मुझपर तेज़ी से लपका।
और अपने बचाव में भागा।
और घबराहट में एक बड़े से गड्ढे में आ गिरा।

हे भगवान! और तुमने उन लोगों को बचाने की कोशिश तक नहीं की?
यानि तुम्हारी नजर में हम मानव कीड़े हैं? याद रखो कि तुम भी मानव ही थे।
तुम मानव भी तो कभी बंदर थे।
अरे... अच्छा रहने दो।
विकास धीरे क्यों हुआ?
पर अब मैं आ गया हूं तो मानवों को चिंता की आवश्यकता नहीं है।
और अब तो हालत यह हो गई है कि सूर्य की
वायुमंडल के पार आ ही नहीं पाता है।
से वायुमंडल को फिर से इतना हल्का कर दूंगा कि पृथ्वी पर सूर्य की किरणें फिर से पूरी तरह से आ सकें।

समुद्र के ऊपर उड़ता हुआ पाया।
?
!!!!!

ध्यान से सुनो, ओल्फ! मैं तुमको सिर्फ दो दिन का समय देता हूँ। तुमको इन दो दिन में मुझे यह बताना है कि पृथ्वीवासी क्या चाहते हैं?
मुझसे, सहयोग या अपनी मौत।
और तब कई अरब आँखों ने वह दृश्य देखा जिसके सामने फुटबाल का रोमांच फीका पड़ गया।
यू.एन.ओ. भवन के अंदर ... के कार्यालय में एक ... मीटिंग बुलाई गई। जिसमें लगभग सभी देशों के शासनाध्यक्ष उपस्थित थे–
मुझे आप सब को वह सूचना देने के लिए भेजा गया है, जिस पर हमारी प्यारी पृथ्वी का जीना या मरना निर्भर करता है।
... हमारे ... की पुष्टि करती है।
टायनासौर को देखने के बाद और किसी प्रमाण की जरूरत ही नहीं है, सर!
माननीय राष्ट्राध्यक्षों, आज पृथ्वी एक बहुत बड़े खतरे का सामना करने जा रही है।

क्या बचकानी बात है! इस वक्त हमारे पास ऐसे ऐसे हथियार है, जिनसे हम आराम से इस महामानव को खत्म कर सकते है।
और अगर वह चाहे तो पूरी पृथ्वी को भी एक ही बार में नष्ट कर सकता है।
इस समय हमको ताकत से नहीं, बल्कि अक्ल से काम लेना होगा। और मिलकर वह रास्ता खोजना होगा, जिससे हम महामानव को रोक सकें।
जी, अगर हम इस महामानव को अपने कब्जे में ले लें, तो इसकी मानसिक शक्तियों के द्वारा हम पूरी दुनिया को अपना गुलाम बना सकते है।
उस महामानव के पास बहुत विकसित मस्तिष्क अवश्य है, परन्तु फिर भी है तो वह मस्तिष्क ही।

ठीक उसी वक्त एक हैलीकॉप्टर बर्फ की ठंडी सतह पर उतरा।
सर, महामानव का अपहरण हो गया है।
हमारे सैटेलाइटों ने पूरी घटना की रील खींच ली है, सर। यह देखिए।

मानव को बांध कर रख पाना असम्भव है।
अब हम इंतजार के अलावा और कुछ भी नहीं कर सकते।
नहीं, महामहिम! हमने इसको ब्रेनवाश किरण की जो मात्रा दी है, उससे तो एक पूरे शहर को जिंदगी भर के लिए ब्रेनवाश किया जा सकता है।
प्रविष्ट होने के बाद इसका अपने दिमाग पर कोई वश नहीं रहेगा।
इसके बाद यह महामानव सिर्फ आपका ही आदेश मानेगा, महामहिम!
क्योंकि महामानव का मस्तिष्क जाग रहा था। और उसको पूरी स्थिति समझने में क्षण भर भी नहीं लगा—
ओह! तो इन मानवों ने मुझे किसी प्रकार अचेत करके बंदी बना लिया है!?
और फिर कमरे में तूफान फट पड़ा।

चूर चूर हो गया—
इन मानवखोरों को ऐसा सबक देना चाहिए जिससे ये मुझपर दोबारा हमला करने का साहस न कर सकें।

इलाकों में तांडव मचा दिया—
ओह! एकदम से गर्मी हो गई है। मेरा मस्तिष्क धीरे धीरे सुन्न हो रहा है।
मुझको ठंडक चाहिए। ठंडक, ठंडक। हा हा हा हा हा।
ठंड से नीले पड़ने लगे।

मानव का पता लगा लिया है।
न रोका गया, तो फिर कोई जिंदा नहीं बचेगा। मुझे तुरंत जाना होगा।
ज्वालामुखी के मुहाने पर मिलो।
पृथ्वीवासियों का संदेश लेकर तुमसे मिलने आ रहा हूं।

और अगले ही पल- एक रोशनी के घेरे ने ध्रुव को हवा
!
पर एकदम तैयार है।
अगर मैं अपने दिमाग को एकदम शून्य रखूं, तो महामानव मेरे विचार नहीं पढ़ पाएगा।
वर्ना अगर उसने मेरे विचार पढ़कर हमारी योजना जान ली तो वह सतर्क हो जाएगा।
लेकिन मैं तुम्हारा दिमाग नहीं पढ़ पा रहा हूं। क्योंकि तुम्हारा दिमाग एकदम विचार शून्य है। चाहते हो।
और यहीं ध्रुव से चूक हो गई।
ध्रुव समझ गया कि गड़बड़ होने वाली है। वह भाग लिया।

एक बटन दबा।
हा हा हा। एक काम पूरा हुआ। अब मिसाइलों की बारी है।

मचाएंगी, जिसे तुम सब हमेशा याद रखोगे।
और मेरा दिमाग मुझे अपनी ऊंगलियां तक हिलाने नहीं दे रहा है।
इस द्वीप का नामोनिशान तक मिट गया।

और कुछ ही क्षण बाद ज्वालामुखी के अंदर एक जबरदस्त धमाका हुआ—
गर्म लावे को दबाने वाली भारी पत्थरों की मोटी पर्त के टुकड़े टुकड़े हो गए—
और महामानव को वातावरण गर्म होता महसूस हुआ।
य... यह क्या? ज्वालामुखी तो फटने वाली है। मुझे... मुझे अपनी मानसिक तरंगों द्वारा इसे फटने से रोकना चाहिए।
आहा! मुझ पर इसकी पकड़ ढीली हो रही है। यही वक्त है।
अभी नहीं, तो कभी नहीं!
ध्रुव ने अपनी इच्छा शक्ति को एक बार फिर इकट्ठी करना शुरू किया।

और वह मानसिक कैद से आजाद हो गया—
अब वक्त बहुत कम था। ध्रुव का हाथ तेजी से घूमा—
और महामानव के पैर जमीन से उखड़ गए।
उसका शरीर एक बार फिर दहकते ज्वालामुखी के गर्भ में गिरने लगा। करोड़ों वर्ष पुराना दृश्य दोहराया जा रहा था—
महामानव के दिमाग पर हावी बेहोशी और गहरी होने लगी
परंतु इससे पहले कि उसका पूरा मस्तिष्क, बेहोशी की गिरफ्त में कैद हो पाता, उसने अपने शरीर को मानसिक सुरक्षा का कवच पहना दिया—
और उसी क्षण - ज्वालामुखी फट गया। एक जोर का धमाका हुआ। पृथ्वी के गर्भ से हजारों टन पत्थर और राख आकाश को छूने लपके—
भड़ड़ड़ड़ड़ड़
और महामानव का बेहोश मगर सुरक्षित शरीर हजारों टन भारी पत्थरों के नीचे दब गया।
और ऊपर - ध्रुव ने मानव जाति को तो बचा लिया था, परंतु उसका स्वयं बच पाना मुश्किल था—

कहीं और - मिसाइलें अब अपने निशाने से कुछ ही क्षण दूर थीं -
!
जनरल, यह तुम क्या कर रहे हो? हमारी तीन मिसाइलें लंदन, मॉस्को और दिल्ली की तरफ बढ़ रही हैं।
सॉरी, सर! मेरा दिमाग मेरे वश में नहीं था। मैं तुरंत मिसाइलों को अंतरिक्ष की तरफ मोड़ देता हूं।
कि तभी - मिसाइलों के कंट्रोल-पैनल पर बैठे जनरल का दिमाग महामानव की मानसिक कैद से आजाद हो गया।
महानगरों की गगनचुंबी इमारतों को लगभग छूती हुई घातक मिसाइलें अंतरिक्ष की तरफ मुड़ गईं -
और अंतरिक्ष में पलभर के लिए तीन सूर्य चमके -
- अब पृथ्वी सुरक्षित थी।
लेकिन ध्रुव नहीं। उत्तरी ध्रुव पर दहकता लावा, बर्फ को भाप में बदलता हुआ ध्रुव की तरफ बढ़ रहा था -
बर्फ की मोटी सतह पतली होती जा रही थी।
और आखिरकार - ध्रुव के पैरों के नीचे की बर्फ की सतह ने जवाब दे दिया -
ओह! मुझे इसी बात का डर था।
तड़ाक!

इतने ठंडे पानी में तो मेरा इलेक्ट्रोनिक यंत्र भी मेरे शरीर को गर्म नहीं रख पाएगा। मेरे हाथ-पैर तो अभी से सुन्न हो रहे हैं।
खून का दौरा भी रुकता सा महसूस हो रहा है।--- पर मैं यहां से बाहर भी तो नहीं निकल सकता।---
क्योंकि गर्म लावा चारों तरफ से मेरी ओर ही आ रहा है। अब थोड़ी देर में मेरे दिल की धड़कन भी बंद हो जाएगी।
लगता है कि आज मेरा अंत आ ही गया।
लेकिन किस्मत भी बहादुरों का ही साथ देती है--
कर्नल, वह रहा ध्रुव। वह ठंडे पानी में गिरा हुआ है।
ओ माई गॉड! तुरंत रस्सी को नीचे लटकाओ।
अपनी आधी चेतना में ध्रुव को महसूस हुआ कि दो हाथ उसको सर्द पानी से बाहर निकाल रहे हैं--
और पांच मिनट बाद- गर्म कंबल में लिपटा ध्रुव गर्मागर्म कॉफी की चुस्कियां ले रहा था--
मैंने कई लड़ाइयां लड़ी हैं, ध्रुव, लेकिन तुम्हारे जैसा जांबाज कभी नहीं देखा। मैं तुमको सेल्यूट करता हूं।
आप तो मुझे शर्मिंदा कर रहे हैं, सर! मुझे पूरा यकीन है कि अगर मेरी जगह आप होते, तो आपने भी ऐसा ही किया होता।

और फिर-
बधाई हो, ध्रुव! तुम्हारा प्लान शत-प्रतिशत कामयाब रहा।
शत प्रतिशत तो नहीं, सर! क्योंकि मेरा प्लान था कि महा-मानव का दिमाग मिसाइलों में उलझा रहेगा, और इस बीच मैं अपना काम कर लूंगा।
लेकिन महामानव चूंकि सतर्क था, इसी लिए वह मेरा प्लान काफी हद तक समझ गया था।...
पर पूरा प्लान नहीं। क्योंकि सौभाग्यवश वह अंत तक यही समझता रहा कि हम उसको मिसाइलों से ही खत्म करना चाहते हैं।
और यहीं वह मात खा गया।
वैसे उस डायनासौर के क्या हाल हैं?
हमें दुख है कि हम उसे बचा नहीं सके।
लेकिन उस डायनासौर के लिए अमेरिकी सरकार ने एक नया म्यूजियम बनाने का फैसला किया है। जिसका नाम होगा... ध्रुव म्यूजियम।
एक ऐसे हीरो के नाम पर, जिसने महामानव को खत्म कर के पूरी मानव-जाति को नष्ट होने से बचाया है।
यहां पर आप शायद गलत कह रहे हैं, सर!...
...क्योंकि मुझे पूरा यकीन है कि महामानव अभी भी जिंदा है।
समाप्त